

आयातुहा 118

23 सूतुल मुअमिनून मक्कियतुन 74

रुकूआतुहा 6

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फरमानेवाला है।

1. बेशक ईमानवाले मुराद पा गए।
2. जो लोग अपनी नमाज़में इज्जो नियाज़ करते हैं।
3. और जो बेहूदा बातोंसे (हर वक़्त) कनारा कश रहेते हैं।
4. और जो (हमेशा) ज़कात अदा (कर के अपनी जानो माल को पाक) करते रहेते हैं।
5. और जो (दाइमन) अपनी शर्मगाहोंकी हिफ़ाज़त करते रहेते हैं।
6. सिवाए अपनी बीवियों के या उन बांदियों के जो उनके हाथोंकी ममलूक हैं, बेशक (अहकामे शरीअत के मुताबिक़ उनके पास जाने से) उन पर कोई मलामत नहीं।
7. फिर जो शख्स उन (हलाल औरतों) के सिवा किसी और का ख़्वाहिशमंद हुआ तो ऐसे लोग ही हदसे तजावुज़ करनेवाले (सरकश) हैं।
8. और जो लोग अपनी अमानतों और अपने वा'दों की पासदारी करनेवाले हैं।
9. और जो अपनी नमाज़ों की (मुदाविमत के साथ) हिफ़ाज़त करनेवाले हैं।
10. येही लोग (जन्नत के) वारिस हैं।
11. येह लोग जन्नतके सबसे आ'ला बागात (जहां तमाम

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ①

الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خِشْعُونَ ②

وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ③

وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ④

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ⑤

إِلَّا عَلَىٰ أَرْوَاحِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ

أَيْسَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ⑥

فَمَنْ ابْتغىٰ وَرَاءَ ذٰلِكَ فَأُولٰٓئِكَ

هُمُ الْعٰدُونَ ⑦

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ

رٰعُونَ ⑧

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَوَاتِهِمْ

يُحَافِظُونَ ⑨

أُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُونَ ⑩

الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ

ने'मतों, राहतों और कुर्बे इलाही की लज़्जतों की कसरत होगी उन) की विरासत (भी) पाएंगे, वोह उनमें हमेशा रहेंगे।

12. और बेशक हमने इन्सानकी तख़लीक़ (की इब्तिदा) मिट्टी (के कीमियाई अज्जा) के खुलासे से फ़रमाई।

13. फिर उसे नुत्फ़ा (तौलीदी क़तरह) बना कर एक मज़बूत जगह (रह्मे मादर) में रखा।

14. फिर हमने उस नुत्फ़े को (रह्मे मादर के अंदर जौककी सूत में) मुअल्लक़ वुजूद बना दिया, फिर हमने उस मुअल्लक़ वुजूदको एक (ऐसा) लोथड़ा बना दिया जो दांतोंसे चबाया हुवा लगता है, फिर हमने उस लोथड़े से हड्डियों का ढांचा बनाया, फिर हमने उन हड्डियों पर गोशत (और पट्टे) चढाए, फिर हमने उसे तख़लीक़की दूसरी सूतमें (बदल कर तदरीजन) नश्वोनुमा दी, फिर (उस) अल्लाहने (उसे) बढ़ा (कर मुहकम वुजूद बना) दिया जो सबसे बेहतर पैदा फ़रमानेवाला है।

15. फिर बेशक तुम इस (जिन्दगी) के बाद ज़रूर मरनेवाले हो।

16. फिर बेशक तुम क़ियामत के दिन (जिन्दा करके) उठाए जाओगे।

17. और बेशक हमने तुम्हारे ऊपर (कुर्रए अर्जी के गिर्द फ़िज़ाए बसीतमें निज़ामे काइनात की हिफ़ाज़तके लिए) सात रास्ते (या'नी सात मक़नातीसी पट्टियां या मैदान) बनाए हैं और हम (काइनातकी) तख़लीक़ (और उसकी हिफ़ाज़त के तकाज़ों) से बेख़बर न थे।

18. और हम एक अंदाज़े के मुताबिक़ (अर्सए दराज़

فِيهَا خَلِدُونَ ۝۱۱

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ

مِّن طِينٍ ۝۱۲

ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ

مَّكِينٍ ۝۱۳

ثُمَّ خَلَقْنَا النَّطْفَةَ عَاقَةً وَخَلَقْنَا

الْعَاقَةَ مُمِصَةً فَخَلَقْنَا الْبُضْعَةَ

عَظْمًا فَكَسَوْنَا الْعِظَمَ لَحْمًا ثُمَّ

أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ ۝۱۴ فَتَبَارَكَ اللَّهُ

أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ۝۱۵

ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَلْبَائِسُونَ ۝۱۶

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ ۝۱۷

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ

طَرَائِقَ ۝۱۸ وَمَا كُنَّا مِنَ الْخَالِقِ

غَافِلِينَ ۝۱۹

وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً يُقَدِّرُ

तक) बादलों से पानी बरसाते रहे, फिर (जब ज़मीन ठंडी हो गई तो) हमने उस पानीको ज़मीन (की नशेबी जगहों) में ठेहरा दिया (जिससे इब्तिदाई समन्दर वुजूदमें आए) और बेशक हम उसे (बुख़ारात बना कर) उड़ा देने पर भी कुदरत रखते हैं।

19. फिर हमने तुम्हारे लिए उससे (दरजा बदरजा या'नी पहले इब्तिदाई नबातात फिर बड़े पौदे फिर दरख्त वुजूदमें लाते हुए) खजूर और अँगूर के बागात बना दिए (मज़ीद बर आँ) तुम्हारे लिए ज़मीनमें (और भी) बहुतसे फल और मेवे (पैदा किए) और (अब) तुम उनमें से खाते हो।

20. और यह दरख्त (ज़ैतून भी हमने पैदा किया है) जो तूरे सीना से निकलता है (और) तेल और खाने वालोंके लिए सालन ले कर उगता है।

21. और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में (भी) ग़ौर तलब पेहलू हैं, जो कुछ उनके शिकमों में होता है हम तुम्हें उसमें से (बा'ज अज्जाको दूध बना कर) पिलाते हैं और तुम्हारे लिए उनमें (और भी) बहुतसे फ़वाइद हैं और तुम उनमें से (बा'ज को) खाते (भी) हो।

22. और उन पर और कश्तियों पर तुम सवार (भी) किए जाते हो।

23. और बेशक हमने नूह (ﷺ) को उनकी क़ौमकी तरफ़ भेजा तो उन्होंने फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम अल्लाहकी इबादत किया करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं है तो क्या तुम नहीं डरते ?

24. तो उनकी क़ौमके सरदार (और वडेर) जो कुफ़र कर रहे थे केहने लगे : यह शख्स महज़ तुम्हारे ही जैसा एक

فَأَسْكَنْهُ فِي الْأَرْضِ نَّ وَ إِنَّا عَلَى  
ذَهَابٍ بِهِ لَقَدِيرُونَ ﴿١٨﴾

فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّتٍ مِّنْ نَّجِيلٍ  
وَ أَعْنَابٍ لَّكُمْ فِيهَا فَوَاقِكُمْ  
كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿١٩﴾

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ  
تَنْثُرُ بِالذَّهْنِ وَصَبِغٍ لِّلْأَكْلِينَ ﴿٢٠﴾

وَ إِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً  
نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا  
مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢١﴾

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

وَ لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَى قَوْمِهِ  
فَقَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ  
مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾

فَقَالَ الْإِسْكَو الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ

बशर है (इसके सिवा कुछ नहीं), यह तुम पर (अपनी) फ़ज़ीलतो बरतरी काइम करना चाहता है, और अगर अल्लाह (हिदायत के लिए किसी पयग़म्बर को भेजना) चाहता तो फ़रिश्तों को उतार देता, हमने तो यह बात (कि हमारे जैसा ही एक शख्स हमारा रसूल बना दिया जाए) अपने अगले आबाओ अजदाद में (कभी) नहीं सुनी।

25. येह शख्स तो सिवाए उसके और कुछ नहीं कि उसे दीवानगी (का आरिज़ा लाहिक हो गया) है सो तुम एक असें तक उसका इन्तिज़ार करो (देखो आगे किया करता है)।

26. नूह (عليه السلام) ने अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मेरी मदद फ़रमा क्यों कि उन्होंने मुझे झुटला दिया है।

27. फिर हमने उनकी तरफ़ वही भेजी कि तुम हमारी निगरानी में और हमारे हुक्म के मुताबिक़ एक कश्ती बनाओ सो जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ जाए और तबूर (भर कर पानी) उबलने लगे तो तुम उसमें हर किस्म के जानवरोंमें से दो दो जोड़े (नरो मादा) बिठा लेना और अपने घरवालों को भी (उसमें सवार कर लेना) सिवाए उन में से उस शख्स के जिस पर फ़रमाने (अज़ाब) पहले ही से सादिर हो चुका है और मुझसे उन लोगोंके बारे में कुछ अर्ज़ भी न करना जिन्होंने (तुम्हारा इन्कारो इस्तेहज़ा की सूरत में) जुल्म किया है वोह (बहर तौर) डुबो दिए जाएंगे।

28. फिर जब तुम और तुम्हारी संगतवाले (लोग) कश्ती में ठीक तरहसे बैठ जाएं तो केहना (कि) सारी ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हमें ज़ालिम क़ौमसे नजात बख़्शी।

29. और अर्ज़ करना : ऐ मेरे रब ! मुझे बा बरकत मंज़िल

قَوْمِهِ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ لَا يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً مَّا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأُولِينَ ﴿٢٣﴾

إِنَّ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَدَدْتُ بُونٍ ﴿٢٦﴾

فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اصْنَعِ الْفُلَكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التُّوهُرُ لَا قَاسِلَكَ فِيهَا مِنْ كُلِّ ذَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۗ وَلَا تَخَاطِبُنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۗ إِنَّهُمْ مُّعْرَقُونَ ﴿٢٧﴾

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلِكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّيْنَاكَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٨﴾

وَقُلْ رَبِّ أَنْزِلْنِي مُنْزَلًا مُّبَرَكًا



पर उतार और तू सबसे बेहतर उतारनेवाला है।

30. बेशक इस (वाकिए)में (बहुत सी) निशानियां हैं और यकीनन हम आजमाइश करनेवाले हैं।

31. फिर हमने उनके बाद दूसरी कौमको पैदा फरमाया।

32. सो हमने उनमें (भी) उन्हीं में से रसूल भेजा कि तुम अल्लाहकी इबादत करो और उसके सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं है, तो क्या तुम नहीं डरते ?

33. और उनकी कौमके (भी वोही) सरदार (और वडेरें) बोल उठे जो कुफ़र कर रहे थे और आखिरतकी मुलाकातको झुटलाते थे और हमने उन्हें दुन्यवी जिन्दगीमें (मालो दौलतकी कसरत के बाइस) आसूदगी (भी) दे रखी थी (लोगों से केहने लगे) कि यह शख्स तो महज़ तुम्हारे ही जैसा एक बशर है, वोही चीजें खाता है जो तुम खाते हो और वोही कुछ पीता है जो तुम पीते हो।

34. और अगर तुमने अपने ही जैसे एक बशरकी इताअत कर ली तो फिर तुम ज़रूर खसारा उठानेवाले होगे।

35. क्या यह (शख्स) तुमसे यह वा'दा ह कर रहा है कि जब तुम मर जाओगे और तुम मिट्टी और (बोसीदह) हड्डियां हो जाओगे तो तुम (दोबारा जिन्दा हो कर) निकाले जाओगे।

36. बईद (अज़ कयास) बईद (अज़ वुकूअ) हैं वोह बातें जिनका तुमसे वा'दा किया जा रहा है।

وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ٢٩

إِنَّ فِي ذَلِكَ لآيَاتٍ وَإِنْ كُنَّا

لَمُبْتَلِينَ ٣٠

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا

آخَرِينَ ٣١

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنْ

اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ

غَيْرِهِ ٣٢ أَفَلَا تَتَّقُونَ ٣٢

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ

كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالْآخِرَةِ وَ

أَتْرَفْنَاهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هَذَا

إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ لَا يَأْكُلُ مِمَّا

تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَ يَشْرَبُ مِمَّا

تَشْرَبُونَ ٣٣

وَلَكِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِثْلَكُمْ إِنَّكُمْ

إِذَا لَخُسْرَاُونَ ٣٤

أَيَعِدْكُمْ أَنْكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَ كُنْتُمْ

تُرَابًا وَ عِظَامًا أَنْكُمْ مُخْرَجُونَ ٣٥

هِيَآتْ هِيَآتْ لِيَأْتُوْا عِدْوَنَ ٣٦

37. वोह (आखिरतकी जिन्दगी कुछ) नहीं हमारी जिन्दगानी तो येही दुनिया है हम (यहीं) मरते और जीते हैं और (बस खत्म), हम (दोबारा) नहीं उठाए जाएंगे।

38. येह तो महज़ ऐसा शख्स है जिसने अल्लाह पर झूटा बोहतान लगाया है और हम बिल्कुल उस पर ईमान लानेवाले नहीं हैं।

39. (पयग़म्बरने) अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मेरी मदद फ़रमा इस सूरेते हाल में कि उन्होंने मुझे झुटला दिया है।

40. इशाद हुवा थोड़ी ही देर में वोह पशेमां हो कर रेह जाएंगे।

41. पस सच्चे वा'दे के मुताबिक उन्हें खौफनाक आवाज़ने आ पकड़ा सो हमने उन्हें खसो खाशाक बना दिया, पस ज़ालिम कौमके लिए (हमारी रहमतसे) दूरी-व-महूरमी है।

42. फिर हमने उनके बाद (यके बाद दीगरे) दूसरी उम्मतों को पैदा फरमाया।

43. कोई भी उम्मत अपने वक्ते मुकर्ररसे न आगे बढ़ सकती है और न वोह लोग पीछे हट सकते हैं।

44. फिर हमने पै दर पै अपने रसूलों को भेजा। जब भी किसी उम्मतके पास उसका रसूल आता वोह उसे झुटला देते तो हम (भी) उनमें से बाज़को बा'ज़ के पीछे (हलाक दर हलाक) करते चले गए और हमने उन्हें दास्तानें बना डाला, पस हलाकत हो उन लोगों के लिए जो ईमान नहीं लाते।

45. फिर हमने मूसा (عليه السلام) और उनके भाई हारून (عليه السلام) को अपनी निशानियां और रौशन दलील दे कर भेजा।

إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ  
وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِبَعُوثِينَ ﴿٣٧﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ  
كُذْبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَبُونَ ﴿٣٩﴾

قَالَ عَسَىٰ قَلِيلٌ لِّيُصْبِحَنَّ  
دُيُومِينَ ﴿٤٠﴾

فَاخَذْتَهُمُ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ  
عُشَاءً ۖ فَبَعْدَ اللَّقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا  
آخَرِينَ ﴿٤٢﴾

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا  
يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٣﴾

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرًا ۗ كُلَّمَا  
جَاءَ أُمَّةٌ رَّسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَاتَّبَعْنَا  
بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ ۗ  
فَبَعْدَ اللَّقَوْمِ الَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ  
بِالْبَيِّنَاتِ وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ﴿٤٥﴾

46. फिर औन और उस (की कौम) के सरदारों की तरफ तो उन्होंने भी तकब्बुरो रऊनतसे काम लिया और वोह भी (बड़े) ज़ालिमो सरकश लोग थे।

إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَأِيهِ فَاسْتَكْبَرُوا  
وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿٣٦﴾

47. सो उन्होंने (भी येही) कहा कि क्या हम अपने जैसे दो बशरों पर ईमान ले आएँ हालांकि उनकी कौम के लोग हमारी परस्तिश करते हैं।

فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا  
وَقَوْمِهِمَا لَنَا عِبْدُونَ ﴿٣٧﴾

48. पस उन्होंने (भी) उन दोनों को झुटला दिया सो वोह भी हलाक किए गए लोगों में से हो गए।

فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْبُهْلَكِيِّينَ ﴿٣٨﴾

49. और बेशक हमने मूसा (ﷺ) को किताब अता फ़रमाई ताकि वोह लोग हिदायत पा जाएँ।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ  
يَهْتَدُونَ ﴿٣٩﴾

50. और हमने इब्ने मरयम (ईसा ﷺ) को और उनकी मां को अपनी (ज़बरदस्त) निशानी बनाया और हमने उन दोनोंको एक (ऐसी) बुलंद ज़मीनमें सुकूनत बख़्शी जो ब आसाइशो आराम रेहने के काबिल (भी) थी और वहां आँखोंके (नज़ारे के) लिए बेहते पानी (या'नी नेहरें, आबशारें और चश्मे भी) थे।

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً  
وَآوَيْنَاهُمَا إِلَى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ  
وَمَعِينٍ ﴿٤٠﴾

51. ऐ उसुले (इज़ाम!) तुम पाकीज़ा चीज़ों में से खाया करो (जैसाकि तुम्हारा मा'मूल है) और नेक अमल करते रहो, बेशक मैं जो अमल भी तुम करते हो उससे खूब वाकिफ़ हूँ।

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُّوَا مِنَ الطَّيِّبَاتِ  
وَأَعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ  
عَلِيمٌ ﴿٤١﴾

52. और बेशक येह तुम्हारी उम्मत है (जो हकीकतमें) एक ही उम्मत (है) और मैं तुम्हारा रब हूँ सो मुझसे डरा करो।

وَإِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً  
وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ﴿٤٢﴾

53. पस उन्होंने अपने (दीनके) अम्रको आपस में इख़्तिलाफ़ करके फ़िर्का फ़िर्का कर डाला, हर फ़िर्केवाले उसी क़दर (दीनके हिस्से) से जो उनके पास है खुश हैं।

فَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا  
كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٤٣﴾

54. पस आप उनको एक असें तक उनके नशए जहालतो जलालत (गुमराही) में छोड़े रखिए।

55. क्या वोह लोग येह गुमान करते हैं कि हम जो (दुनिया में) मालो औलाद के जरीए उनकी मदद कर रहे हैं।

56. तो हम उनके लिए भलाइयों (की फ़राहमी) में जल्दी कर रहे हैं, (ऐसा नहीं) बल्कि उन्हें शज़र ही नहीं है।

57. बेशक जो लोग अपने रबकी ख़शियत से मुज़्तरिब और लरजां रेहते हैं।

58. और जो लोग अपने रबकी आयतों पर ईमान रखते हैं।

59. और जो लोग अपने रबके साथ (किसीको) शरीक नहीं ठेहराते।

60. और जो लोग (अल्लाहकी राहमें इतना कुछ) देते हैं जितना वोह दे सकते हैं और (उसके बा वुजूद) उनके दिल खाइफ़ रेहते हैं कि वोह अपने रबकी तरफ़ पलट कर जानेवाले हैं (कहीं येह ना मक्बूल न हो जाए)।

61. येही लोग भलाइयों (के समेटने में) जल्दी कर रहे हैं और वोही उसमें आगे निकल जानेवाले हैं।

62. और हम किसी जानको तकलीफ़ नहीं देते मगर उसकी इस्ते'दाद के मुताबिक़ और हमारे पास नविशतए (आ'माल मौजूद) है जो सच सच केह देगा और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा।

63. बल्कि उनके दिल इस (कुरआन के पैग़ाम) से

فَذَرُهُمْ فِي غَمَرَتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٥٣﴾

أَيَحْسَبُونَ أَنَّنَا نُمِدُّهُمْ بِهِ مِنْ مَّالٍ وَبَنِينَ ﴿٥٥﴾

نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾

وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَرَجِعُونَ ﴿٦٠﴾

أُولَٰئِكَ يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ﴿٦١﴾

وَلَا نَكْتِفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمَرَةٍ مِنْ هَذَا



गफ़लत में (पड़े) हैं और इसके सिवा (भी) उनके कई और (बुरे) आ'माल हैं जिन पर वोह अमल पैरा हैं।

64. यहां तक कि जब हम उनके अमीर और आसूदा हाल लोगों को अज़ाब की गिरफ़्त में लेंगे तो उस वक़्त वोह चीख़ उठेंगे।

65. (उनसे कहा जाएगा) तुम आज मत चीखो, बेशक हमारी तरफ़ से तुम्हारी कोई मदद नहीं की जाएगी।

66. बेशक मेरी आयतें तुम पर पढ़ पढ़ कर सुनाई जाती थीं तो तुम एड़ियों के बल उलटे पलट जाया करते थे।

67. उससे गुरूरो तकबुर करते हूए रात के अंधेरेमें बेहूदा गोई करते थे।

68. सो क्या उन्होंने उस फ़रमाने (इलाही) में गौरो ख़ौज नहीं किया या उनके पास कोई ऐसी चीज़ आ गई है जो उनके अगले बापदादा के पास नहीं आई थी।

69. या उन्होंने अपने रसूलको नहीं पेहचाना सो (इस लिए) वोह उसके मुन्किर हो गए हैं।

70. या येह केहते हैं कि उस (रसूल ﷺ) को जुनून (लाहिक) हो गया है (ऐसा हरगिज़ नहीं) बल्कि वोह उनके पास हक़ ले कर तशरीफ़ लाए हैं और उनमें से अक्सर लोग हक़को पसंद नहीं करते।

71. और अगर हक़ (तअाला) उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी करता तो (सारे) आस्मान और ज़मीन और जो (मख़्तुकातो मौजूदात) उनमें हैं सब तबाहो बरबाद हो जाते बल्कि हम उनके पास वोह (कुरआन) लाए हैं

و لَهُمْ أَعْمَالٌ مِّن دُونِ ذَلِكَ  
هُمُ لَهَا عَمَلُونَ ﴿٦٣﴾

حَتَّىٰ إِذَا آخَذْنَا مِيثَرَفِيهِمْ  
بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْرُونَ ﴿٦٤﴾

لَا تَجْرُوا الْيَوْمَ ۖ إِنَّكُمْ مِنَّا  
لَا تُصْرُونَ ﴿٦٥﴾

قَدْ كَانَتْ آيَاتِي تُتلىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ  
عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ تَنكِصُونَ ﴿٦٦﴾

مُتَكَبِّرِينَ ۚ بِهِ سِيرَاتُهُمْ جُرُونَ ﴿٦٧﴾

أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ  
مَا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ  
مُنْكَرُونَ ﴿٦٩﴾

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلْ جَاءَهُمْ  
بِالْحَقِّ وَآكُثْرُهُمْ لِلْحَقِّ كِرْهُونَ ﴿٧٠﴾

وَلَوْ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ  
السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۗ  
بَلْ آتَيْنَاهُمْ بَيِّنَاتٍ مِّنْهُمُ عَنْ

जिसमें उनकी इज्जत तो शरफ (और नामवरी का राज) है सो वोह अपनी इज्जत ही से मुंह फेर रहे हैं।

72. क्या आप उनसे (तबलीगे रिसालत पर) कुछ उजरत मांगते हैं? (ऐसा भी नहीं है) आपके तो रबका अज्र (ही बहुत) बेहतर है और वोह सबसे बेहतर रोजी रसां है।

73. और बेशक आप तो (उन्ही के भले के लिए) उन्हें सीधी राहकी तरफ बुलाते हैं।

74. और बेशक जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते (वोह) ज़रूर (सीधी) राह से कतराए रहेते हैं।

75. और अगर हम उन पर रहम फरमा दें और जो तकलीफ उन्हें (लाहिक्) है उसे दूर कर दें तो वोह भटकते हुए अपनी सरकशी में मज़ीद पके हो जाएंगे।

76. और बेशक हमने उन्हें अज़ाबमें पकड़ लिया फिर (भी) उन्होंने अपने रब के लिए अज़िज़ी इख़्तियार न की और न वोह (उसके हुज़ूर गिड़गिड़ाए।

77. यहां तककि जब हम उन पर निहायत ही सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल देंगे (तो) उस वक़्त वोह उसमें इन्तिहाई हैरतसे साकितो मायूस (पड़े) रहेंगे।

78. और वोही है जो तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल (व दिमाग) रफ़ता रफ़ता वुजूद में लाया (मगर) तुम लोग बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो।

79. और वोही है जिसने तुम्हें रूए ज़मीन पर पैदा कर के फैला दिया और तुम उसी के हुज़ूर जमा' किए जाओगे।

ذُكِرْهُمْ مُعْرِضُونَ ٤١

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا وَخَرَجًا رَّبِّكَ  
خَيْرٌ ۗ وَهُوَ خَيْرُ الرَّزُقِينَ ٤٢

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَى صِرَاطٍ  
مُّسْتَقِيمٍ ٤٣

وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ  
عَنِ الصِّرَاطِ لَنُكِبُونَ ٤٤

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ  
ضُرِّ لَدُّجٍ أَوْ فَطِنَانِهِمْ يُعْهَدُونَ ٤٥

وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا  
اسْتَكْبَرُوا رَبِّهِمْ وَمَا يَنْصَرِعُونَ ٤٦

حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا  
ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ  
مُبْلِسُونَ ٤٧

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَكُمْ السَّمْعَ وَ  
الْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۗ قَلِيلًا مَّا  
تَشْكُرُونَ ٤٨

وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ  
وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ٤٩

80. और वोही है जो ज़िन्दगी बख़्शाता है और मौत देता है और शबो रोज़का गर्दिश करना (भी) उसीके इख्तियार में है सो क्या तुम समझते नहीं हो ?

وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ  
اِخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ أَفَلَا  
تَعْقِلُونَ ﴿٨٠﴾

81. बल्कि येह लोग (भी) उसी तरहकी बातें करते हैं जिस तरहकी अगले (काफ़िर) करते रहे हैं।

بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالِ الْاَوَّلُونَ ﴿٨١﴾

82. येह केहेते हैं कि जब हम मर जाएंगे और हम ख़ाक और (बोसीदा) हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम (फिर ज़िन्दा कर के) उठाए जाएंगे ?

قَالُوا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّ  
عِظَامًا ءَاِنَّا لَنَبْعُوثُ فِيهَا ﴿٨٢﴾

83. बेशक हमसे (भी) और हमारे आबाओ अजदाद से (भी) पहले येही वा'दा किया जाता रहा (है), येह (बातें) महज़ पहले लोगों के अफ़साने हैं।

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَاؤُنَا  
هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَا اِلَّا  
اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾

84. (उनसे) फ़रमाइए कि ज़मीन और जो कोई उसमें (रेह रहा) है (सब) किसकी मिल्क है, अगर तुम (कुछ) जानते हो ?

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَاَمِنْ فِيهَا  
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٤﴾

85. वोह फ़ौरन बोल उठेंगे कि (सब कुछ) अल्लाहका है (तो) आप फ़रमाइए : फिर तुम नसीहत कुबूल क्यूं नहीं करते।

سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا  
تَذَكَّرُونَ ﴿٨٥﴾

86. (उनसे दरयाफ़्त) फ़रमाइए कि सातों आस्मानोंका और अर्शे अज़ीम (या'नी सारी काइनात के इक़्तदारे आ'ला) का मालिक कौन है ?

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ  
وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾

87. वोह फ़ौरन कहेंगे : येह (सब कुछ) अल्लाहका है (तो) आप फ़रमाइए : फिर तुम डरते क्यूं नहीं हो ?

سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٧﴾

88. आप (उन से) फ़रमाइए कि वोह कौन है जिसके दस्ते कुदरत में हर चीज़की कामिल मिल्कियत है और जो पनाह देता है और जिसके खिलाफ़ (कोई) पनाह नहीं

قُلْ مَنْ بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ  
وَ هُوَ يُجِيزُ وَا لَا يُجَارُ عَلَيْهِ

दी जा सकती, अगर तुम (कुछ) जानते हो ?

89. वोह फ़ौरन कहेंगे : येह (सब शानें) अल्लाह ही के लिए हैं (तो) आप फ़रमाएं फिर तुम्हें कहां से (जादू की तरह) फ़रेब दिया जा रहा है?

90. बल्कि हमने उन्हें हक़ पहुंचा दिया और बेशक वोह झूटे हैं।

91. अल्लाहने (अपने लिए) कोई औलाद नहीं बनाई और न ही उसके साथ कोई और खुदा है वरना हर खुदा अपनी अपनी मख़्लूक़को (ज़रूर अलग) ले जाता और यकीनन वोह एक दूसरे पर ग़ल्बा हासिल करते (और पूरी काइनातमें फ़साद बपा हो जाता)। अल्लाह उन बातों से पाक है जो वोह बयान करते हैं।

92. (वोह) पोशीदा और आश्कार (सब चीज़ों) का जाननेवाला है सो वोह उन चीज़ों से बुलंदो बरतर है जिन्हें येह शरीक ठेहराते हैं।

93. आप (दुआ) फ़रमाइए कि ऐ मेरे रब ! अगर तू मुझे वोह (अज़ाब) दिखाने लगे जिसका उनसे वा'दा किया जा रहा है।

94. (तो) ऐ मेरे रब ! मुझे ज़ालिम क़ौममें शामिल न फ़रमाना।

95. और बेशक हम इस बात पर ज़रूर क़ादिर हैं कि हम आपको वोह (अज़ाब) दिखा दें जिसका हम उनसे वा'दा कर रहे हैं।

96. आप बुराईको ऐसे तरीके से दफ़ा' किया करें जो

إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝۸۸

سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ ۙ قُلْ فَأَنَّى  
تُسْحَرُونَ ۝۸۹

بَلْ آتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَ إِنَّهُمْ  
لَكَذِبُونَ ۝۹۰

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَلَدٍ ۚ وَمَا كَانَ  
مَعَهُ مِنْ إِلٰهٍ إِذًا لَّزَهَبَ كُلُّ  
إِلٰهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ عَلَى  
بَعْضٍ ۙ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا  
يَصِفُونَ ۝۹۱

عَلِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَتَعَالَى  
عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝۹۲

قُلْ رَبِّ اِمَّا تُرِيْبِيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ۝۹۳

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ  
الظّٰلِمِيْنَ ۝۹۴

وَ اِنَّا عَلٰى اَنْ تُرِيْكَ مَا نُوْعِدُهُمْ  
لَقٰدِرُونَ ۝۹۵

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السّيِّئَةِ ۙ



सबसे बेहतर हो हम उन (बातों) को खूब जानते हैं जो यह बयान करते हैं।

97. और आप (दुआ) फ़रमाइए : ऐ मेरे रब ! मैं शैतानोंके वस्वसों से तेरी पनाह मांगता हूँ।

98. और ऐ मेरे रब ! मैं उस बात से (भी) तेरी पनाह मांगता हूँ कि वोह मेरे पास आएँ।

99. यहां तककि जब उनमें से किसीको मौत आ जाएगी (तो) वोह कहेगा : ऐ मेरे रब ! मुझे (दुनिया में) वापस भेज दे।

100. ताकि मैं उस (दुनिया ) में कुछ नेक अमल कर लूँ जिसे मैं छोड़ आया हूँ। हरगिज़ नहीं, येह वोह बात है जिसे वोह (बतौर हसरत) केह रहा होगा, और उनके आगे उस दिन तक एक परदा (हाइल) है (जिस दिन) वोह (कब्रों से) उठाए जाएंगे।

101. फिर जब सूर फूँका जाएगा तो उनके दरमियान उस दिन न रिश्ते (बाकी) रहेंगे और न वोह एक दूसरेका हाल पूछ सकेंगे।

102. पस जिनके पलड़े (ज़ियादह आ'मालके बाइस) भारी होंगे तो वोही लोग कामयाबो कामरान होंगे।

103. और जिनके पलड़े (आ'मालका वज़न न होनेके बाइस ) हलके होंगे तो येही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको नुक्सान पहुंचाया वोह हमेशा दोज़ख़में रहेनेवाले हैं।

104. उनके चेहरोंको आग झुलस देगी और वोह उसमें दांत निकले बिगड़े हुए मुंहके साथ पड़े होंगे।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ﴿٩٦﴾

وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ  
الشَّيَاطِينِ ﴿٩٧﴾

وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِ ﴿٩٨﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ  
قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ﴿٩٩﴾

لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ  
كَلَّا إِنَّمَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَمِنْ  
وَرَاءِهِمْ بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ  
يُبْعَثُونَ ﴿١٠٠﴾

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ  
بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿١٠١﴾

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ  
الْمُقْلِحُونَ ﴿١٠٢﴾

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ  
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ  
خَالِدُونَ ﴿١٠٣﴾

تَتَفَحَّمُونَ وَجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا  
كَالْحِجُونَ ﴿١٠٤﴾

105. (उनसे कहा जाएगा :) क्या तुम पर मेरी आयतें पढ़ पढ़ कर नहीं सुनाई जाती थीं फिर तुम उन्हें झुटलाया करते थे।

106. वोह कहेंगे : ऐ हमारे रब ! हम पर हमारी बद बख्ती ग़ालिब आ गई थी और हम यकीनन गुमराह कौम थे।

107. ऐ हमारे रब ! तू हमें यहांसे निकाल दे फिर अगर हम (उसी गुमराही का) इआदह करें तो बेशक हम ज़ालिम होंगे।

108. इशाद हुवा : (अब) उसीमें ज़िल्लत के साथ पड़े रहो और मुझसे बात न करो।

109. बेशक मेरे बन्दों में से एक तबक्का ऐसा भी था जो (मेरे हुजूर) अर्ज किया करते थे : ऐ हमारे रब ! हम ईमान ले आए हैं पस तू हमें बख्श दे और हम पर रहम फ़रमा और तू (ही) सबसे बेहतर रहम फ़रमानेवाला है।

110. तो तुम उनका तमस्खुर किया करते थे यहां तक कि उन्होंने तुम्हें मेरी याद भी भुला दी और तुम (सिर्फ) उनकी तज़हीक ही करते रहेते थे।

111. बेशक आज मैंने उन्हें उनके सब्रका जो वोह करते रहे (येह) सिला अता फ़रमाया है कि वोह कामयाब हो गए हैं।

112. इशाद होगा कि तुम ज़मीनमें बरसोंके शुमार से कितनी मुद्दत ठेहरे रहे (हो) ?

113. वोह कहेंगे : हम एक दिन या दिनका कुछ हिस्सा ठेहरे (होंगे) आप आ'दादो शुमार करनेवालों से पूछ लें।

أَلَمْ تَكُنْ الَّتِي تَتْلَىٰ عَلَيْهِمْ فُكْرًا  
بِمَا تَكْذِبُونَ ﴿١٠٥﴾

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا  
وَكَانُوا مَاضِيِينَ ﴿١٠٦﴾

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا  
فَأَنْتَ الظَّالِمُونَ ﴿١٠٧﴾

قَالَ احْسَبُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ﴿١٠٨﴾

إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي  
يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا  
وَإِرْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ﴿١٠٩﴾

فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِحْرِيًّا حَتَّىٰ  
أَسْوَأْتُمْ أَزْوَاجَ بَعْضِكُمْ  
بِبَعْضٍ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ  
تَصْحُكُونَ ﴿١١٠﴾

إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا  
إِنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿١١١﴾

قُلْ كَمْ لَبِئْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ  
سِنِينَ ﴿١١٢﴾

قَالُوا لَبِئْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ  
فَسْئَلِ الْعَادَّةِينَ ﴿١١٣﴾

114. इर्शाद होगा तुम (वहां) नहीं ठेहरे मगर बहुत ही थोड़ा अर्सा काश! तुम (येह बात वहीं) जानते) होते।

قُلْ إِنْ لَيْسَتْ إِلَّا قَلِيلًا لَوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٣﴾

115. सो किया तुमने येह खयाल कर लिया था कि हमने तुम्हें बेकार (व बे मक्सद) पैदा किया है और येह कि तुम हमारी तरफ लौट कर नहीं आओगे।

أَوْحَيْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾

116. पस अल्लाह जो बादशाहे हकीकी है बुलंदो बरतर है उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं बुजुर्गी और इज्जतवाले अर्श (इकितदार) का (वोही) मालिक है।

تَتَعَلَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾

117. और जो शख्स अल्लाहके साथ किसी और मा'बूद की परस्तश करता है उसके पास उसकी कोई सनद नहीं है सो उसका हिसाब उसके रब ही के पास है। बेशक काफिर लोग फलाह नहीं पाएंगे।

وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾

118. और आप अर्ज कीजिए : ऐ मेरे रब ! तू बख्श दे और रहम फरमा और तू (ही) सबसे बेहतर रहम फरमानेवाला है।

وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ﴿١١٨﴾

आयातुहा 64

24 सूरतुन नूर म-दनिय्यतुन 102

रुकूआतुहा 9

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फरमानेवाला है।

1. (येह) एक (अज़ीम) सूरत है जिसे हमने उतारा है और हमने इस (के अहकाम) को फर्ज कर दिया है और हमने इसमें वाजेह आयतें नाज़िल फरमाई हैं ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

سُورَةٌ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١﴾

2. बदकार औरत और बदकार मर्द (अगर गैर शादी शुदह हों) तो उन दोनों में से हर एक को (शराइते हद के साथ

الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ وَلَا

जुमें जिनाके साबित हो जाने पर) सौ (सौ) कोड़े मारो (जब कि शादी शुदह मर्दों औरत की बदकारी पर सज़ा रज़्म है और यह सज़ाए मौत है) और तुम्हें उन दोनों पर (दीनके हुक्मके इज़ाअ) में ज़रा तरस नहीं आना चाहिए अगर तुम अल्लाह पर और आखिरतके दिन पर ईमान रखते हो, और चाहिए कि उन दोनोंकी सज़ा (के मौके') पर मुसलमानोंकी (एक अच्छी खासी) जमाअत मौजूद हो।

3. बदकार मर्द सिवाए बदकार औरत या मुशरिक औरतके (किसी पाकीज़ा औरतसे) निकाह (करना पसंद) नहीं करता और बदकार औरत (भी) सिवाए बदकार मर्द या मुशरिक के (किसी सालेह शख्ससे) निकाह (करना पसंद) नहीं करती, और यह (फे'ले जिना) मुसलमानों पर हुराम कर दिया गया है।

4. और जो लोग पाकदामन औरतों पर (बदकारी की) तोहमत लगाएं फिर चार गवाह पेश न कर सकें तो तुम उन्हें (सज़ाए कज़फ़ के तौर पर) अस्सी कोड़े लगाओ और कभी भी उनकी गवाही कुबूल न करो, और येही लोग बदकार हैं।

5. सिवाए उनके जिन्होंने इस (तोहमत लगाने) के बाद तौबा कर ली और (अपनी) इस्लाह कर ली, तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है (उनका शुमार फ़ासिकों में नहीं होगा मगर उससे हद्दे कज़फ़ मुआफ़ नहीं होगी)।

6. और जो लोग अपनी बीवियों पर (बदकारी की) तोहमत लगाएं और उनके पास सिवाए अपनी ज़ात के कोई गवाह न हों तो ऐसे किसी भी एक शख्स की गवाही येह है कि (वोह खुद) चार मर्तबा अल्लाहकी क़सम

تَأْخُذْكُمْ بِهَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ  
إِنَّ كُنْتُمْ تُوْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ  
الْآخِرِ ۚ وَلَيْشَهِدَ عَدَايَهُمَا طَآئِفَةٌ  
مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝۲

الزَّانِي لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ  
مُشْرِكَةً ۚ وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا إِلَّا  
زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرْمٌ ذَلِكِ  
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝۳

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ  
لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ  
فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً ۚ وَ  
لَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ۚ  
وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝۴

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَلِكَ وَ  
أَصْلَحُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ  
رَّحِيمٌ ۝۵

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ  
يَكُنْ لَهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ  
فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَدَاتٍ



खा कर गवाही दे कि वोह (इल्जाम लगानेमें) सच्चा है।

7. और पांचवीं मर्तबा येह (कहे) कि उस पर अल्लाहकी ला'नत हो अगर वोह झूटा हो।

8. और (इसी तरह) येह बात उस (औरत) से (भी) सज़ा को टाल सकती है कि वोह चार मर्तबा अल्लाहकी कसम खा कर (खुद गवाही दे कि वोह मर्द इस तोहमत के लगाने में) झूटा है।

9. और पांचवीं मर्तबा येह (कहे) कि उस पर (या'नी मुझ पर) अल्लाहका गज़ब हो अगर येह (मर्द इस इल्जाम लगाने में) सच्चा हो।

10. और अगर तुम पर अल्लाहका फ़ज़ल और उसकी रहमत न होती (तो तुम ऐसे हालातमें ज़ियादह परेशान होते) और बेशक अल्लाह बड़ा ही तौबा कुबूल फ़रमानेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

11. बेशक जिन लोगोंने (आइशा सिद्दीका तैयबा ताहेरा رضي الله عنها पर) बोहतान लगाया था (वोह भी) तुम ही में से एक जमात थी, तुम इस (बोहतान के वाकये) को अपने हक़ में बुरा मत समझो बल्कि वोह तुम्हारे हक़ में बेहतर (हो गया) है, ★ उनमें से हर एकके लिए इतनाही गुनाह है जितना उसने कमाया, और उनमें से जिसने उस (बोहतान) में सब से ज़ियादह हिस्सा लिया इस के लिए जबरदस्त अज़ाब है।

12. ऐसा क्यूं न हुवा कि जब तुमने इस (बोहतान) को सुना था तो मोमिन मर्द और मोमिन औरतें अपनों के बारेमें नेक गुमान कर लेते और (येह) केह देते कि येह खुला (झूट पर मब्नी) बोहतान है।

بِاللَّهِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ  
وَالْحَامِسَةَ أَنْ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ

إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ  
وَيَدْرَأُ عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ  
أَرْبَعَ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ  
الْكَاذِبِينَ ٨

وَالْحَامِسَةَ أَنْ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا  
إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ ٩  
وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ  
وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ١٠

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ  
مِنْكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَكُمْ بَلْ  
هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ مَا  
اكَتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ وَالَّذِي تَوَلَّى  
كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ١١

لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ  
وَ الْمُؤْمِنَاتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا  
وَقَالُوا اهَذَا إِفْكٌ مُبِينٌ ١٢

★ (क्योंकि तुम्हें इसी हवालेसे अहकामे शरीअत मिल गए और आइशा सिद्दीका तैयबा ताहेराह رضي الله عنها की कफ़रामनीका गवाह खुद अल्लाह बन गया जिससे तुम्हें उनकी शानका पता चल गया)

13. यह (इफतिरा पर्दाज लोग) इस(तूफान) पर चार गवाह क्यूं न लाए, फिर जब वोह गवाह नहीं ला सकते तो येही लोग अल्लाहके नजदीक झुटे हैं।

14. और अगर तुम पर दुनिया ओ आखिरत में अल्लाहका फजल और उसकी रहमत न होती तो जिस (तोहमत के) चर्चोंमें तुम पड़ गए हो उस पर तुम्हें जबरदस्त अजाब पहेँचता।

15. जब तुम इस (बात) को (एक दूसरे से सुन कर) अपनी जबानों पर लाते रहे और अपने मुंहसे वोह कुछ केहते रहे जिसका (खुद) तुम्हें कोइ इल्म ही न था और उस (चर्चों) को मा'मूली बात खयालकर रहे थे, हालांके वोह अल्लाहके हुजूर बडी (जसारत हो रही) थी।

16. और जब तुमने येह (बोहतान) सुना था तो तुमने (उसी वक्त) येह क्यों न केह दिया के हमारे लिए येह (जाइज ही) नहीं के हम उसे जबान पर ले आएँ (बल्कि तुम येह केहते कि ऐ अल्लाह!) तू पाक है (इस बातसे के ऐसी औरतको अपने हबीबे मुकर्रम ﷺ की महबूब जौजा बना दे) येह बहुत बड़ा बोहतान है।

17. अल्लाह तुमको नसीहत फरमाता है कि फिर कभी भी ऐसी बात (उम्र भर) न करना अगर तुम अहले ईमान हो।

18. और अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों को वाजेह तौर पर बयान फरमाता है, और अल्लाह खूब जानने वाला बडी हिकमतवाला है।

19. बेशक जो लोग इस बातको पसंद करते हैं कि मुसलमानों में बेहयाई फैले उनके लिए दुनिया और

لَوْ لَا جَاءَ وَ عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةٍ  
شُهَدَاءَ قَدْ لَمْ يَأْتُوا بِاللَّهِدَاءِ  
فَأُولَئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَذِبُونَ ﴿١٣﴾

وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ  
فِي الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا  
أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٤﴾

إِذْ تَقُولُونَ بِلسِنَتِكُمْ وَ تَقُولُونَ  
بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ  
وَ تَحْسَبُونَهُ هَيِّئًا وَ هُوَ عِنْدَ اللَّهِ  
عَظِيمٌ ﴿١٥﴾

وَلَوْ لَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ  
لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا سُبْحَانَكَ  
هَذَا بَهْتَانٌ عَظِيمٌ ﴿١٦﴾

يَعِظُكُمْ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ  
أَبَدًا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٧﴾

وَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ وَ اللَّهُ  
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٨﴾

إِنَّ الَّذِينَ يُجِبُونَ أَنْ تَشِيْعَ  
الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ

आखिरत में दर्दनाक अज़ाब है, और अल्लाह (ऐसे लोगोंके अज़ाइमको) जानता है और तुम नहीं जानते।

20. और अगर तुम पर (इस रसूले मुकर्रम ﷺ के सदकेमें) अल्लाहका फ़जल और उसकी रहमत न होती तो (तुम भी पेहली उम्मतों की तरह तबाह कर दिए जाते) मगर अल्लाह बड़ा शफ़ीक़ बड़ा रहम फ़रमाने वाला है।

21. ऐ ईमान वालो! शैतानके रास्तों पर न चलो, और जो शख्स शैतानके रास्तों पर चलता है तो वोह यकीनन बेहयाई और बुरे कामों (के फरोग) का हुक्म देता है, और अगर तुम पर अल्लाहका फ़जल और उसकी रहमत न होती तो तुम में से कोई शख्स भी कभी (इस गुनाहे तोहमतके दाग़ से) पाक न हो सकता लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक फ़रमा देता है, और अल्लाह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

22. और तुममें से (दीनी) बुजुर्गीवाले और (दुन्यवी) कशाइशवाले (अब) इस बातकी क़सम न खाएं कि वोह (इस बोहतान के जुर्ममें शरीक) रिश्तेदारों और मोहताजों और अल्लाहकी राह में हिजरत करने वालोंको (माली इम्दाद न) देंगे उन्हें चाहिए कि(उनका कुसूर) मुआफ़ कर दें और (उनकी गलती से) दरगुजर करें, क्या तुम इस बातको पसंद नहीं करते के अल्लाह तुम्हें बख़्शा दे, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

23. बेशक जो लोग उन पारसा मोमिन औरतों पर जो (बुराईके तसव्वूर से भी) बेख़बर और ना आशना हैं (ऐसी) तोहमत लगाते हैं वोह दुनिया और आखिरत

عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۝  
وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝  
وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ  
وَأَنَّ اللَّهَ سَرَّوْفٌ رَّحِيمٌ ۝

يَأْيُهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا  
خُطُوتِ الشَّيْطَانِ ۝ وَمَنْ يَتَّبِعْ  
خُطُوتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ  
بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ  
اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ  
مِّنْ أَحَدٍ أَبَدًا ۝ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي  
مَنْ يَشَاءُ ۝ وَاللَّهُ سَبِيحٌ عَلَيْهِ ۝  
وَلَا يَأْتِلْ أَوْلُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَ  
السَّعَةِ ۝ أَنْ يُؤْتُوا أَوْلِيَ الْقُرْبَىٰ وَ  
الْمَسْكِينِ وَ الْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ  
اللَّهِ ۝ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۝ أَلَا  
تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۝ وَاللَّهُ  
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ  
الْغُلُفَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعْنُوا فِي الدُّنْيَا

(दोनों जहानों) में मलक़ून हैं और उनके लिए जबरदस्त अज़ाब है।

24. जिस दिन (खुद) उनकी जबानें और उनके हाथ और उनके पाऊं उन्हीं के खिलाफ गवाही देंगे के जो कुछ वोह करते रहे थे।

25. उस दिन अल्लाह उन्हें उन (के आ'माल) की पूरी पूरी जज़ा जिसके वोह सही हक़दार हैं दे देगा और वोह जान लेंगे के अल्लाह (खूद भी) हक़ है (और हक़ को) ज़ाहिर फ़रमाने वाला (भी) है।

26. नापाक औरतें नापाक मर्दों के लिए (मख़सूस) हैं और पलीद मर्द पलीद औरतों के लिए हैं, और (इसी तरह) पाको तैयब औरतें पाकीज़ा मर्दों के लिए (मख़सूस) हैं और पाको तैयब मर्द पाकीज़ा औरतों के लिए हैं (सो तुम रसूलुल्लाह ﷺ की पाकीज़गी व तहारत को देख कर खूद सोच लेते के अल्लाहने उन के लिए ज़ौजाभी किस कदर पाकीज़ा-व-तैयब बनाई होगी), येह (पाकीज़ाह लोग) उन (तोहमतों) से कुल्लियतन बरी हैं जो येह (बदजुबान) लोग केह रहे हैं, उनके लिए (तो) बख़्शाईश और इज्जतो बुजुर्गीवाली अता (मुकदर हो चुकी) है (तुम उनकी शान में जबानदराजी करके क्यूं अपना मुंह काला और अपनी आख़िरत तबाहो बरबाद करते हो)।

27. ऐ ईमान वालो ! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में दाख़िल न हुआ करो, यहां तक कि तुम उनसे इजाज़त लेलो और उनके रेहनेवालों को (दाख़िल होते ही) सलाम कहा करो येह तुम्हारे लिए बेहतर (नसीहत) है ताकि तुम (उसकी हिक्मतों में) ग़ौरो फ़िक़ करो।

وَالْآخِرَةُ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۙ

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۙ

يَوْمَ مَنذُوبٌ قِيْلُهُمْ اللَّهُ دِيْنُهُمُ الْحَقُّ وَيَعْلَمُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ السَّمِيعُ ۙ

الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ ۖ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۗ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۙ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۙ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا ۖ وَتَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ۗ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۙ



28. फिर अगर तुम उन (घरों) में किसी शख्सको मौजूद न पाओ तो तुम उनके अंदर मत जाया करो यहां तक कि तुम्हें (इस बातकी) इजाज़त दी जाए और अगर तुमसे कहा जाए के वापस चले जाओ तो तुम वापस पलट जाया करो, यह तुम्हारे हकमें बड़ी पाकीजा बात है, और अल्लाह उन कामों से जो तुम करते हो खूब आगाह है।

29. उसमें तुम पर गुनाह नहीं कि तुम उन मकानात (व इमारात)में जो किसीकी मुस्तक़िल रहाइशगाह नहीं हैं (मसलन होटल, सराए और मुसाफ़िर खाने वगैरा में बग़ैर इजाज़त के) चले जाओ (के) उनमें तुम्हें फाइदाह उठानेका हक (हासिल) है, और अल्लाह उन (सब बातों) को जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो।

30. आप मोमिन मर्दोंसे फ़रमा दें कि वोह अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहोंकी हिफ़ाज़त किया करें, येह उनके लिए बड़ी पाकीजा बात है। बेशक अल्लाह उन कामों से खूब आगाह है जो येह अंजाम दे रहे हैं।

31. और आप मोमिन औरतों से फ़रमा दें के वोह (भी) अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त किया करें और अपनी आराइशो ज़ेबाईश को ज़ाहिर न किया करें सिवाए(उसी हिस्से)के जो इसमें से खुद ज़ाहिर होता है और वोह अपने सरों पर औढे हुऐ दूपट्टे (और चादरें) अपने गिरेबानों और सीनों पर (भी) डाले रहा करें और वोह अपने बनाव सिंगार को (किसी पर) ज़ाहिर न किया करें सिवाए अपने शौहरों के या अपने बापदादा या अपने शौहरों के बापदादा के या अपने बेटों या शौहरों के बेटों के या अपने भाईयों या अपने भतीजों या अपने भांजोंके या अपनी (हम मज़हब, मुसलमान)

فَإِنْ لَّمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ امْرُجِعُوا فَامْرُجِعُوا هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾  
لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَعْضُوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا أَرْوَاجَهُمْ ۗ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾  
وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَعْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُرُجِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۗ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنَاتِ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ خَوَاتِمَهُنَّ أَوْ

औरतों या अपनी ममलूका बांदियों के या मर्दों में से वोह खिदमतगार जो ख्वाहिशो शहवत से खाली हों या वोह बच्चे जो (कम सिनीके बाइस अभी) औरतोंकी परदे वाली चीजोंसे आगाह नहीं हूए (येह भी मुस्तस्नना हैं) और न (चलते हूए) अपने पाऊं (ज़मीन पर इस तरह) मारा करें कि (पैरोंकी झनकार से) उनका वोह सिंगार मा' लूम हो जाए जिसे वोह (हुक्मे शरीअतसे) पौशीदह किए हूए हैं, और तुम सबके सब अल्लाहके हुजूर तौबा करो ऐ मोमिनो! ताकि तुम (उन अहूकाम पर अमल पैरा हो कर) फ़लाह पा जाओ।

32. और तुम अपने मर्दों और औरतों में से उनका निकाह कर दिया करो जो (उम्रे निकाह के बा वजूद) बगैर अज़दवाजी जिन्दगी के (रेह रहे) हों और अपने बा सलाहियत गुलामों और बांदियों का भी (निकाह कर दिया करो), अगर वोह मोहताज होंगे (तो) अल्लाह अपने फ़जलसे उन्हें ग़नी कर देगा, और अल्लाह बडी वुसूअत वाला बड़े इल्मवाला है।

33. और ऐसे लोगोंको पाकदामनी इख्तेयार करना चाहिए जो निकाह (की इस्तेताअत) नहीं पाते यहां तकके अल्लाह उन्हें अपने फ़जल से ग़नी फ़रमा दे, और तुम्हारे जेरे दस्त (गुलामों और बांदियों) में से जो मकातिब (कुछ माल कमा कर देनेकी शर्त पर आज़ाद) होना चाहें तो उन्हें मकातिब (मजकूरा शर्त पर आज़ाद) कर दो अगर तुम उनमें भलाई जानते हो, और तुम (खुद भी) उन्हें अल्लाह के माल में से (आज़ाद होने के लिए) दे दो जो उसने तुम्हें अ़ता फ़रमाया है, और तुम अपनी बांदियोंको दुन्यवी जिन्दगीका फाइदा हासिल करने के लिए बदकारी पर मजबूर न करो जबकि वोह पाकदामन (या हिफ़ाज़ते

نَسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ  
أَوِ التَّبِيعِينَ غَيْرِ أَوْلِيَ الْإِرْبَابَةِ مِنْ  
الرِّجَالِ أَوْ الطِّفْلِ الذِّينَ لَمْ  
يُظْهَرُوا عَلَى عَوْرَاتِ النِّسَاءِ ۖ وَلَا  
يُضْرَبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا  
يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ ۗ وَتُؤْتَوْنَ  
إِلَى اللَّهِ جَبِيعًا أَيُّهُ الْمُؤْمِنُونَ  
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾

وَ أَنْكَحُوا الْآيَاتِي مِنْكُمْ وَ  
الصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ  
إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُعْهِمُ اللَّهُ مِنْ  
فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾

وَلَيْسَتَّعْفِيفِ الذِّينَ لَا يَجِدُونَ  
نِكَاحًا حَتَّى يُعْهِمَهُمُ اللَّهُ مِنْ  
فَضْلِهِ ۗ وَالذِّينَ يَبْتَغُونَ الْكُتُبَ  
مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ  
عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۗ وَآتُوهُمْ مِّنْ  
مَّالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ ۗ وَلَا تَكْرَهُوا  
فَتْيَتَكُمْ عَلَى الْبِعَاءِ إِنْ أَرَادَنْ  
تَحْصُنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ

निकाह में) रेहना चाहती हैं, और जो शख्स उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके मजबूर हो जाने के बाद (भी) बड़ा बख्शानेवाला महरबान है।

34. और बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ वाजेह और रौशन आयतें नाज़िल फ़रमाई हैं और कुछ उन लोगों की मिसालें (या'नी किस्सए आइशा की तरह किस्सए मरयम और किस्सए यूसुफ़) जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं और (येह) परहेज़गारों के लिए नसीहत है।

35. अल्लाह आस्मानों और ज़मीन का नूर है उसके नूरकी मिसाल (जो नूरे मुहंमदी ﷺ की शकल में दुनिया में रौशन है) उस ताक़ (नुमा सीनए अक़दस) जैसी है जिस में चिरागे (नुबुवत रौशन) है ; (वोह) चिराग, फ़ानूस (कल्बे मुहंमदी ﷺ) में रखा है। (येह) फ़ानूस (नूरे इलाही के परतव से इस कदर मुनव्वर है) गोया एक दरख़ान्दा सितारा है (येह चिरागे नुबुवत) जो जैतून के मुबारक दरख़त से (या'नी आलमे कुदस के बा बरकत राब्तए वही से या अबियाओ रुसुल ही के मुबारक शिजराए नबुवत से) रौशन हुवा है न (फ़क़त) शर्की है और न गर्बी (बल्कि अपने फ़ैजे नूरकी वुसअत में आलमगीर है) ऐसा मा'लूम होता है कि इसका तैल (खूद ही) चमक रहा है अगरचे अभी उसे (वह्ये रब्बानी और मो'जिज़ाते आस्मानी की) आगने छुवा भी नहीं (वोह) नूरके उपर नूर है (या'नी नूरे वुजूद पर नूरे नुबुवत गोया वोह ज़ात दोहरे नूरका पैकर है), अल्लाह जिसे चाहता है अपने नूर (की मा'रेफ़त) तक पहुंचा देता है, और अल्लाह लोगों (की हिदायत) के लिए मिसालें बयान फ़रमाता है, और अल्लाह हर चीज़से ख़ूब आगाह है।

الدُّنْيَا وَمَنْ يُكْرِهُنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِنْ  
بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٣﴾  
وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ  
وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِن  
قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾  
اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ  
مِثْلُ نُورِ كَوْكَبٍ فِي زُجَاجَةٍ  
الزُّجَاجَةِ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ  
دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ  
مُّبْرَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَا شَرْقِيَّةٍ  
وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ  
وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ  
لَوْ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ  
مَنْ يَشَاءُ وَيَضْرِبُ اللَّهُ  
الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٥﴾

36. (अल्लाहका यह नूर) ऐसे घरों (मसाजिद और मराकिज़) में (मुयस्सर आता है) जिन (की क़दरो मन्ज़िलत) के बुलंद किए जाने और जिनमें अल्लाह के नाम का ज़िक्र किए जानेका हुक्म अल्लाह ने दिया है (यह वोह घर है कि अल्लाह वाले) उनमें सुब्हो शाम उसकी तस्बीह करते हैं।

37. (अल्लाह के इस नूरके हामिल) वोही मरदाने (खुदा) हैं जिन्हें तिजारत और ख़रीदो फ़रोख़्त न अल्लाहकी याद से गाफ़िल करती है और न नमाज़ कायम करने से और न ज़कात अदा करने से (बल्कि दुन्यवी फ़राइज की अदाएगी के दौरान भी) वोह (हमा वक़्त) उस दिनसे डरते रहेते हैं जिस में (ख़ौफ़ के बाइस) दिल और आँखें (सब) उलट पलट हो जाएंगी।

38. ताकि अल्लाह उन्हें उन (नेक) आ'माल का बेहतर बदला दे जो उन्होंने किए हैं और अपने फ़जल से उन्हें और (भी) ज़ियादह (अता) फ़रमा दे, और अल्लाह जिसे चाहता है बिग़ैर हिसाबके रिज़क (व अता) से नवाज़ता है।

39. और काफ़िरों के आ'माल चटयल मैदान में सराबकी मानिन्द हैं जिसको प्यासा पानी समझता है। यहां तक कि जब उसके पास आता है तो उसे कुछ (भी) नहीं पाता (उसी तरह उसने आख़िरत में) अल्लाह को अपने पास पाया मगर अल्लाहने उसका पूरा हिसाब (दुनिया में ही) चुका दिया था, और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है।

40. या (काफ़िरों के आ'माल) उस गेहरे समन्दरकी तारीकियोंकी मानिन्द हैं जिसे मौजने ढांपा हुवा हो (फिर) उसके ऊपर एक और मौज हो (और) उसके ऊपर बादल हों (यह तेह दर तेह) तारीकियां एक दूसरे के ऊपर हैं, जब

فِي بُيُوتٍ أَدَانَ اللَّهُ أَنْ تُرْفَعَ وَ  
يُذَكَّرَ فِيهَا اسْمُهُ لَا يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا  
بِالْعُدُوِّ وَالْأَصَالِ ۝۳۶

رِجَالٌ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا  
بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ  
وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ يَخَافُونَ يَوْمًا  
تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ۝۳۷

لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا  
وَ يَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ  
يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۳۸

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ  
بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمَانُ مَاءً ۗ  
حَتَّى إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَ  
وَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ فَوَقَّعَهُ حِسَابَهُ ۗ  
وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝۳۹

أَوْ كظلماتٍ في بحرٍ ليلٍ يغشىه موجٌ  
من فوقه موجٌ من فوقه سحابٌ  
ظلماتٌ بعضها فوق بعضٍ إذا أحرَبه



(ऐसे समन्दर में डूबने वाला कोई शख्स) अपना हाथ बाहर निकाले तो उसे (कोई भी) देख न सके, और जिस के लिए अल्लाह ही ने नूरे (हिदायत) नहीं बनाया तो उस के लिए (कहीं भी) नूर नहीं होता।

41. क्या तुमने नहीं देखा कि जो कोई भी आस्मानों और ज़मीनमें है वोह (सब) अल्लाह ही की तस्बीह करते हैं और परिन्दे (भी फ़िज़ाओं में) पर फैलाए हूए (उसी की तस्बीह करते हैं), हर एक (अल्लाह के हुज़ूर) अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह को जानता है, और अल्लाह उन कामों से खूब आगाह है जो वोह अंजाम देते हैं।

42. और सारे आस्मानों और ज़मीन की हुक्मरानी अल्लाह ही की है, और सबको उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।

43. क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ही बादल को पहले) आहिस्ता आहिस्ता चलाता है फिर उस (के मुख़लिफ़ टुकड़ों) को आपस में मिला देता है फिर उसे तेह बह तेह बना देता है फिर तुम देखते हो कि उसके दरमियान खाली जगहोंसे बारिश निकल कर बरस्ती है, और वोह उसी आस्मान (या'नी फ़िज़ा) में बरफानी पहाड़ोंकी तरह (दिखाई देनेवाले) बादलों में से ओले बरसाता है, फिर जिस पर चाहता है उन ओलों को गिराता है और जिससे चाहता है उनको फेर देता है (मज़ीद येह कि उन्हीं बादलों से बिजली भी पैदा करता है), यूँ लगता है कि उस (बादल) की बिजलीकी चमक आँखों (को ख़ैरा करके उन) की बीनाई उचक ले जाएगी।

44. और अल्लाह रात और दिनको (एक दूसरे के ऊपर) पलटता रेहता है, और बेशक उसमें अक्लो बसीरत वालों के लिए (बडी) रेहनुमाई है।

يَدَاهُ لَمْ يَكْدِرْهَا ۖ وَمَنْ لَمْ يُجْعَلِ  
اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَالَهُ مِنْ نُورٍ ۚ ﴿٣٠﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرِ صَفَّتٍ ۖ  
كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۗ  
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٣١﴾

وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ  
وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٣٢﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُرْجِي سَحَابًا ثُمَّ  
يُؤْتِفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا  
فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خَلْقِهِ ۗ وَ  
يُنزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا  
مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ  
وَيَصْرِفُهُ عَنِ مَن يَشَاءُ ۗ يَكادُ  
سَنَابِقُهُ يُدْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۗ ﴿٣٣﴾

يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ إِنَّ  
فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٣٤﴾

45. और अल्लाहने हर चलने फिरनेवाले (जानदार) की पैदाइश (की कीमियाई इब्तिदा) पानी से फ़रमाई, फिर उनमें से बा'ज़ वोह हूए जो अपने पेटके बल चलते हैं और उन में से बा'ज़ वोह हूए जो दो पांव पर चलते हैं, और उन में से बा'ज़ वोह हूए जो चार (पैरों) पर चलते हैं, अल्लाह जो चाहता है पैदा फ़रमाता रहता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा कादिर है।

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِّن مَّاءٍ ۚ  
فَمِنْهُمْ مَّن يَّسِيْرٌ عَلَىٰ بَطْنِهِ ۚ  
وَمِنْهُمْ مَّن يَّسِيْرٌ عَلَىٰ رِجْلَيْنِ ۚ  
وَمِنْهُمْ مَّن يَّسِيْرٌ عَلَىٰ اَرْبَعٍ ۗ  
يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَاءُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ  
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٥﴾

46. यकीनन हमने वाजेह और रौशन बयान वाली आयतें नाजिल फ़रमाई हैं, और अल्लाह (उनके ज़रीए) जिसे चाहता है सीधी राहकी तरफ़ हिदायत फ़रमा देता है।

لَقَدْ اَنْزَلْنَا اٰیٰتٍ مُّبِيْنٰتٍ ۗ وَاللّٰهُ  
يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاءُ اِلٰى صِرَاطٍ  
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٦﴾

47. और वोह (लोग) केहते हैं कि हम अल्लाह पर और रसूल (ﷺ) पर ईमान ले आए हैं और इताअत करते हैं फिर उस (कौल) के बाद उनमें से एक गिरोह (अपने इकरार से) रूगरदानी करता है, और येह लोग (हकीकत में) मोमिन (ही) नहीं हैं।

وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ  
وَ اَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰوْا فَرِیْقًا مِّنْهُمْ  
مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۗ وَمَا اُوْلٰئِكَ  
بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٧﴾

48. और जब उन लोगों को अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ बुलाया जाता है कि वोह उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमा दे तो उस वक़्त उनमें से एक गिरोह (दरबारे रिसालत में आने से) गुरेज़ां होता है।

وَ اِذَا دُعُوْا اِلٰى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ  
لِيَحْكَمْ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِیْقًا مِّنْهُمْ  
مُّعْرِضُوْنَ ﴿٣٨﴾

49. और अगर वोह हक़वाले होते तो वोह उस (रसूल ﷺ) की तरफ़ मुतीअ़ हो कर तेज़ी से चले आते।

وَ اِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوْا اِلَيْهِ  
مُدْعٰیْنَ ۗ ﴿٣٩﴾

50. क्या उनके दिलों में (मुनाफ़िकत की) बीमारी है या वोह (शाने रिसालत में) शक करते हैं या वोह उस बातका अंदेशा रखते हैं कि अल्लाह और उसका

اَفِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ اَمْ اُرْتَابُوْا  
اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِبِّفَ اللّٰهُ

रसूल (ﷺ) उनपर जुल्म करेंगे, (नहीं) बल्कि वोही लोग खुद ज़ालिम हैं।

51. ईमान वालोंकी बाततो फ़क़त येह होती है कि जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि वोह उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमाए तो वोह येही कुछ कहें कि हमने सुन लिया, और हम (सरापा) इताअत पैरा हो गए, और ऐसे ही लोग फ़लाह पानेवाले हैं।

52. और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअत करता है और अल्लाह से डरता और उसका तक्वा इख़्तियार करता है पस ऐसे ही लोग मुराद पानेवाले हैं।

53. और वोह लोग अल्लाहकी बड़ी भारी (ताकीदी) कस्में खाते हैं कि अगर आप उन्हें हुक़्म दें तो वोह (जिहादके लिए) ज़रूर निकलेंगे, आप फ़रमा दें कि तुम कस्में मत खाओ (बल्कि) मा'रूफ़ तरीके से फ़रमांबरदारी (दरकार) है, बेशक अल्लाह उन कामों से ख़ूब आगाह है जो तुम करते हो।

54. फ़रमा दीजिए : तुम अल्लाहकी इताअत करो और रसूल (ﷺ) की इताअत करो, फिर अगर तुमने (इताअत)से रूगरदानी की तो (जान लो) रसूल (ﷺ) के जिम्मे वोही कुछ है जो उन पर लाज़िम किया गया और तुम्हारे जिम्मे वोह है जो तुम पर लाज़िम किया गया है, और अगर तुम उनकी इताअत करोगे तो हिदायत पा जाओगे, और रसूल (ﷺ) पर (अहक़ाम को) सरीहन पहुंचा देने के सिवा (कुछ लाज़िम) नहीं है।

55. अल्लाहने ऐसे लोगोंसे वा'दा फ़रमाया है (जिसका ईफ़ा और ता'मील उम्मत पर लाज़िम है) जो तुम में से

عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ ۖ بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ  
الظَّالِمُونَ ﴿٥٠﴾

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا  
دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ  
بَيْنَهُمْ أَنْ يُقْبَلُوا وَسُبْحٰنَا وَأَطْعٰنَا  
وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥١﴾

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشِ  
اللَّهَ وَيَتَّقْهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ  
الْقَائِرُونَ ﴿٥٢﴾

وَأَقْسُوا بِاللَّهِ جَهْدَ آيْمَانِهِمْ  
لِيُنْزِلَ أَمْرَهُمْ لِيُخْرِجَنَّ قُلٌ لَّا  
تُقْسُوا طَاعَةً مَّعْرُوفَةً ۖ إِنَّ  
اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ  
فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَ  
عَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِنْ تُطِيعُوهُ  
تَهْتَدُوا ۗ وَ مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا  
الْبَلٰغُ الْمُبِينُ ﴿٥٤﴾

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَ  
عَمِلُوا الصَّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي

ईमान लाए और नेक अमल करते रहे वोह जरूर उनहीको ज़मीनमें ख़िलाफ़त (या'नी अमानत इक़्तिदार का हक़) अता फ़रमाएगा जैसा कि उसने उन लोगोंको (हक़्के) हुकूमत बख़्शा था जो उनसे पहले थे और उनके लिए उनके दीनको जिसे उसने उनके लिए पसंद फ़रमाया है (ग़ल्बाओ इक़्तिदार के ज़रीए) मज़बूतो मुस्तहक़म फ़रमा देगा और वोह जरूर (इस तमक्कुन के बाइस) उनके पिछले ख़ौफ़को (जो उनकी सियासी, मआशी और समाजी कमज़ोरी की वजह से था) उनके लिए अम्नो हिफ़ाज़त की हाल तसे बदल देगा, वोह (बेख़ौफ़ हो कर) मेरी इबादत करेंगे मेरे साथ किसीको शरीक नहीं ठेहराएंगे (या'नी सिर्फ़ मेरे हुक्म और निज़ाम के ताबे' रहेंगे), और जिसने उसके बाद नाशुकी (या'नी मेरे अहक़ामसे इन्हिराफ़ो इन्कार)को इख़्तियार किया तो वोही लोग फ़ासिक़ (व नाफ़रमान) होंगे।

56. और तुम नमाज़ (के निज़ाम) को काइम रखो और ज़कात की अदाएगी (का इन्तिजाम) करते रहो और रसूल (ﷺ) की (मुकम्मल) इताअत बजा लाओ ताकि तुम पर रहम फ़रमाया जाए (या'नी ग़ल्बाओ इक़्तिदार, इस्तेहक़ाम और अम्नो हिफ़ाज़त की ने'मतों को बरकरार रखा जाए)।

57. और येह ख़याल हरगिज़ न करना कि इन्कारो नाशुकी करनेवाले लोग ज़मीन में (अपने हलाक किए जानेसे अल्लाह को) आज़िज़ कर देंगे, और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

58. ऐ ईमानवालो ! चाहिए कि तुम्हारे ज़ेरे दस्त (गुलाम और बांदियां) और तुम्हारे ही वोह बच्चे जो (अभी)

الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ  
قَبْلِهِمْ ۖ وَ لِيَبْكِتَنَّ لَهُمْ دِينَهُمْ  
الَّذِي أَرْضَى لَهُمْ وَيُبَدِّلَهُمْ مِنْ  
بَعْدِ خَوْفِهِمْ أُمَّمًا يُعْبُدُونََنِي لَا  
يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ  
ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٥﴾

وَ اتَّبِعُوا الصَّلَاةَ وَ اتُوا الزَّكَاةَ وَ  
اطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا  
مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا لَهُمْ  
الْتَأْرُطُ وَ لَيْسَ الْبَصِيرُ ﴿٥٧﴾  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنَكُمْ  
الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ



जवान नहीं हूए (तुम्हारे पास आने के लिए) तीन मवाके' पर तुमसे इजाजत लिया करें, (एक) नमाजे फ़जरसे पहले और (दूसरे) दोपहर के वक़्त जब तुम (आराम के लिए) कपड़े उतारते हो और (तीसरे) नमाजे इशाके बाद (जब तुम ख़्वाबगाहों में चले जाते हो), (येह) तीन (वक़्त) तुम्हारे पर्दे के हैं, इन (अवकात) के अलावाह न तुम पर कोई गुनाह है और न उन पर, (क्यों कि बक्या अवकात में वोह) तुम्हारे हां कसरत के साथ एक दूसरे के पास आते जाते रहते हैं, उसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें वाजेह फ़रमाता है और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला हिक्मत वाला है।

59. और जब तुम में से बच्चे हद्दे बुलूगको पहुँच जाएं तो वोह (तुम्हारे पास आने के लिए) इजाजत लिया करें जैसा कि उनसे पहले (दीगर बालिग़ अफ़राद) इजाजत लेते रहते हैं। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम ख़ूब वाजेह फ़रमाता है और अल्लाह ख़ूब इल्मवाला और हिक्मतवाला है।

60. और वोह बूढ़ी ख़ाना नशीन औरतें जिन्हें (अब) निकाहकी ख़्वाहिश नहीं रही उन पर इस बातमें कोई गुनाह नहीं कि वोह अपने (ऊपरसे ढांपनेवाले इज़ाफ़ी) कपड़े उतार लें बशर्तेकि वोह (भी) अपनी आराइशको ज़ाहिर करनेवाली न बनें, और अगर वोह (मज़ीद) परहेजगारी इख़्तियार करें (या'नी ज़ाइद ओढ़नेवाले कपड़े भी न उतारें) तो उनके लिए बेहतर है, और अल्लाह ख़ूब सुनने वाला जानने वाला है।

61. अंधे पर कोई रुकावट नहीं और न लंगड़े पर कोई हर्ज है और न बीमार पर कोई गुनाह है और न खुद तुम्हारे

لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ط  
مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ  
تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهْرِ وَمِنْ  
بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ط ثَلَاثَ عَوْرَاتٍ  
لَكُمْ ط لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ  
جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ ط طُوفُونَ عَلَيْكُمْ  
بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ ط كَذَلِكَ يُبَيِّنُ  
اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ ط وَاللَّهُ عَلِيمٌ  
حَكِيمٌ ٥٨

وَإِذَا بَدَأَ الْإِنْفَالُ مِنْكُمْ الْحُلُمَ  
فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ  
مِنْ قَبْلِهِمْ ط كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ  
لَكُمْ آيَاتِهِ ط وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ٥٩  
وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا  
يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ  
جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ  
مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ط وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ  
خَيْرٌ لَّهُنَّ ط وَاللَّهُ سَبِيحٌ عَلِيمٌ ٦٠

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى  
الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى السَّرِيضِ

लिए (कोई मुजाइका है) कि तुम अपने घरोंसे (खाना) खा लो या अपने बापदादा के घरों से या अपनी माओं के घरों से या अपने भाइयों के घरों से या अपनी बेहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के घरोंसे या अपनी खालाओं के घरोंसे या जिन घरोंकी कुंजियां तुम्हारे इख्तियार में हैं (या'नी जिनमें उनके मालिकों की तरफसे तुम्हें हर किस्म के तसर्फुफ की इजाजत है) या अपने दोस्तों के घरों से (खाना खा लेने में मुजाइका नहीं), तुम पर इस बात में कोई गुनाह नहीं कि तुम सबके सब मिल कर खाओ या अलग अलग, फिर जब तुम घरों में दाखिल हुआ करो तो अपने (घरवालों) पर सलाम कहा करो (येह) अल्लाहकी तरफ से बा बरकत पाकीजा दुआ है, इस तरह अल्लाह अपनी आयतोंको तुम्हारे लिए वाजेह फरमाता है ताकि तुम (अहकामे शरीअत और आदाबे ज़िन्दगी को) समझ सको।

62. ईमानवाले तो वोही लोग हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान ले आए हैं और जब वोह आपके साथ किसी ऐसे (इज्तिमाई) काम पर हाज़िर हों जो (लोगोंको) यकजा करनेवाला हो तो वहां से चले न जाएं (या'नी उम्मतमें इज्तिमाइयत और वहदत पैदा करने के अमल में दिल जमई से शरीक हों) जब तक कि वोह (किसी खास उज़्रके बाइस) आपसे इजाजत न ले लें, (ऐ रसूले मोअज़्जम!) बेशक जो लोग (आपही को हाकिम और मरजा' समझ कर) आपसे इजाजत तलब करते हैं वोही लोग अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान

حَرَجٌ وَلَا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا  
مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ  
بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ  
أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ  
أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّتِكُمْ أَوْ  
بُيُوتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَلَتِكُمْ أَوْ  
مَا مَلَكَتُمْ مَفَاتِحَهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ  
لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا  
جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا فَإِذَا دَخَلْتُمْ  
بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ  
عِنْدِ اللَّهِ مُبْرَكَةٌ طَيِّبَةٌ كَذَلِكَ  
يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ  
تَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ  
وَرَسُولِهِ إِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ  
جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوا  
إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُكَ أُولَٰئِكَ  
الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ  
فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ  
فَأَذْنُ لِيَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَ

रखनेवाले हैं, फिर जब वोह आपसे अपने किसी काम के लिए (जानेकी) इजाज़त चाहें तो आप (हाकिमो मुख्तार हैं) उनमें से जिसे चाहें इजाज़त मर्हमत फ़रमा दें और उनके लिए (अपनी मजलिस से इजाज़त ले कर जाने पर भी) अल्लाहसे बख़्शाश मांगें (कि कहीं इतनी बात पर भी गिरफ्त न हो जाए), बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

63. (ऐे मुसलमानो!) तुम रसूल के बुलाने को आपसमें एक दूसरेको बुलानेकी मिस्ल करार न दो (जब रसूले अकरम ﷺ को बुलाना तुम्हारे बाहमी बुलावे की मिस्ल नहीं तो खुद रसूल ﷺ की ज़ाते गिरामी तुम्हारी मिस्ल कैसे हो सकती है), बेशक अल्लाह ऐसे लोगोंको (खूब) जानता है जो तुम में से एक दूसरेकी आड़में (दरबारे रिसालत ﷺ से) चुपके से खिसक जाते हैं, पस वोह लोग डरें जो रसूल (ﷺ) के अम्ने (अदब)की ख़िलाफ़ वरज़ी कर रहे हैं कि (दुनिया में ही) उन्हें कोई आफ़त आ पहुंचेगी या (आख़िरत में) उन पर दर्दनाक अज़ाब आन पड़ेगा।

64. ख़बरदार! जो कुछ आस्मानों और ज़मीनमें है (सब) अल्लाह ही का है, वोह यकीनन जानता है जिस हाल पर तुम हो (ईमान पर हो या मुनाफ़िक़त पर), और जिस दिन लोग उसकी तरफ़ लौटाए जाएंगे तो वोह उन्हें बता देगा जो कुछ वोह किया करते थे, और अल्लाह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

اسْتَغْفِرْ لَهُمْ اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ  
رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ  
كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۚ قَدْ  
يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ  
مِنْكُمْ لِيُؤَادُوا ۖ فليَحْذَرِ الَّذِينَ  
يُخَافُونَ عَنَ أَمْرٍ أَن تَصِيْبَهُمْ  
فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ  
الْأَرْضِ ۗ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ  
عَلَيْهِ ۗ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ  
فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ  
شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

आयातुहा 77

25 सूरातुल फुर्कान मक्किय्यतुन 42

रुकूआतुहा 6

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरुअ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फरमानेवाला है।

1. (वोह अल्लाह) बड़ी बरकतवाला है जिसने (हक़ो बातिल में फर्क और) फ़ैसला करनेवाला (कुरआन) अपने (मेहबूबो मुकर्रब) बंदे पर नाज़िल फरमाया ताकि वोह तमाम जहानों के लिए डर सुनानेवाला हो जाए।

2. वोह (अल्लाह) के आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत उसीके लिए है और जिसने न (अपने लिए) कोई औलाद बनाई है और न बादशाहीमें उसका कोई शरीक है और उसीने हर चीज़को पैदा फरमाया है फिर उस (की बका-व-इर्तिका के हर मर्हले पर उसके ख़वास, अफ़्फ़ाल और मुद्दत, अल ग़रज़ हर चीज़) को एक मुकर्ररा अंदाज़े पर ठेहराया है।

3. और इन (मुशरेकीन) ने अल्लाहको छोड़ कर और मा'बूद बना लिए हैं जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं कर सकते बल्कि वोह खुद पैदा किए गए हैं और न ही वोह अपने लिए किसी नुक़सान के मालिक हैं और न नफ़े' और न वोह मौत के मालिक हैं और न हयात के और न (ही मरने के बाद) उठा कर जमा' करनेका (इख़्तियार रखते हैं)।

4. और काफ़िर लोग केहते हैं कि येह (कुरआन) महज़ इफ़्तिरा है जिसे उस (मुहइए रिसालत) ने घड़ लिया है और उस (के घड़ने) पर दूसरे लोगोंने उसकी मददकी है बेशक काफ़िर जुल्म और झुट पर (उतर) आए हैं।

5. और केहते हैं (येह कुरआन) अगलों के अप्साने हैं

تَبْرَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى  
عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ①

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ  
وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ  
يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ  
كُلَّ شَيْءٍ فَقَدْ رَأَاهُ تَقْدِيرًا ②

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِهَا آلِهَةً  
لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ  
وَلَا يَمْلِكُونَ لِأَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَ  
لَا نَفْعًا وَ لَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَ  
لَا حَيَاةً وَ لَا سُورًا ③

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا  
إِفْكٌ افْتَرَاهُ وَ أَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ  
آخَرُونَ فَقَدْ جَاءُوا ظُلْمًا وَ زُورًا ④  
وَقَالُوا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا



जिनको इस शख्सने लिखवा रखा है फिर वोह (अफसाने) उसे सुब्दो शाम पढ़ कर सुनाए जाते हैं (ताकि उन्हें याद कर के आगे सुना सके)।

6. फ़रमा दीजिए : इस (कुरआन) को उस (अल्लाह) ने नाज़िल फ़रमाया है जो आस्मानों और ज़मीन में (मौजूद) तमाम राजों को जानता है, बेशक वोह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

7. और वोह केहते हैं कि इस रसूल को किया हुआ है, येह खाना खाता है और बाज़ारों में चलता फिरता है। उसकी तरफ़ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया कि वोह उसके साथ (मिल कर) डर सुनानेवाला होता।

8. या उसकी तरफ़ कोई ख़ज़ाना उतार दिया जाता या (कम अज़ कम) उसका कोई बाग़ होता जिस (की आमदनी) से वोह खाया करता और ज़ालिम लोग (मुसलमानों) से केहते हैं कि तुम तो महज़ एक सहर ज़दा शख्स की पैरवी कर रहे हो।

9. (ऐ हबीबे मुकर्रम ! ) मुलाहिज़ा फ़रमाइए येह लोग आपके लिए कैसी (कैसी) मिसालें बयान करते हैं पस येह गुमराह हो चुके हैं सो येह (हिदायतका) कोई रास्ता नहीं पा सकते।

10. वोह बडी बरकत वाला है अगर चाहे तो आपके लिए (दुनिया ही में) उससे (कहीं) बेहतर बागात बना दे जिनके नीचे से नेहरें रवां हों और आपके लिए आलीशान मेहलात बना दे (मगर नबुवतो रिसालत के लिए येह शराइत नहीं हैं)।

11. बल्कि उन्होंने कियामतको (भी) झुठला दिया है,

فَهِ تَسْمَىٰ عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلاً ٥

قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ  
غَفُورًا رَحِيمًا ٦

وَقَالُوا مَالِ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ  
الطَّعَامَ وَيَشْرَبُ فِي الْأَسْوَاقِ لَوْ  
لَا أَنْزَلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونُ مَعَهُ  
نَذِيرًا ٧

أَوْ يُنْفِثَ إِلَيْهِ كَذُوبًا أَوْ تَكُونُ لَهُ  
جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا وَقَالَ الظَّالِمُونَ  
إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا ٨  
أَنْظُرْ كَيْفَ صَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ  
فَصَلُّوا فَلَا يَسْتَضِيعُونَ سَبِيلًا ٩

تَبَارَكَ الَّذِي إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ  
خَيْرًا مِمَّنْ ذَلِكَ جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ  
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَ يَجْعَلُ لَكَ  
قُصُورًا ١٠

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا

और हमने (हर) उस शख्स के लिए जो क़ियामतको झुटलाता है (दोज़ख़की) भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।

12. जब वोह (आतिशे दोज़ख़) दूरकी जगहसे (ही) उनके सामने होगी येह उसके जौश मारने और चिंघाडने की आवाज़ को सुनेंगे।

13. और जब वोह उसमें किसी तंग जगहसे जंजीरों के साथ जकड़े हुए (या अपने शऐयतानों के साथ बंधे हुए) डाले जाएं गे इस वक्त वोह (अपनी) हलाकत को पुकारेंगे।

14. (उनसे कहा जाएगा :) आज (सिर्फ) एक ही हलाकतको न पुकारो बल्कि बहोत सी हलाकतों को पुकारो।

15. फ़रमा दीजिए : क्या येह (हाल त) बेहतर है या दाएमी जन्नत (की जिन्दगी) जिसका परहेजगारों से वा'दा किया गया है, येह उन (के आ'माल) की जज़ा और ठिकाना है।

16. उन के लिए उन (जन्नतों) में वोह (सब कुछ मुयस्सर) होगा जो वोह चाहेंगे (उसमें) हमेशा रहेंगे येह आपके रबके जिम्मए (करम) पर मत्लूबा वा'दा है (जो पूरा हो कर रहेगा)।

17. और उस दिन अल्लाह उन्हें और उनको, जिनकी वोह अल्लाह के सिवा परस्तिश करते थे, जमा' करेगा, फिर फ़रमाएगा क्या तुमने ही मेरे उन बंदोंको गुमराह कर दिया था या वोह (खुद) ही राहसे भटक गए थे।

18. वोह कहेंगे तेरी जात पाक है हमें (तो) येह बात (भी)

لَيْسَ كَذَبًا بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝۱۱

إِذَا رَأَوْهُمْ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ  
سَبَعُوا لَهَا تَعِيظًا وَزَفِيرًا ۝۱۲

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا  
مُقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ۝۱۳

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَ  
ادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ۝۱۴

قُلْ أَذَلِكْ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ  
الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ ۖ كَانَتْ لَهُمْ  
جَزَاءً وَمَصِيرًا ۝۱۵

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خُلْدًا ۖ  
كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَسْئُولًا ۝۱۶

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ  
مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أءَأَنْتُمْ  
أَصَلَلْتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ هُمْ  
صَلُّوا السَّبِيلَ ۝۱۷

قَالُوا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يُنْبِئُنَا لَنَا

जेबा न थी के हम तेरे सिवा औरोंको दोस्त (ही) बनाएँ  
(चेह जाए कि हम उन्हें तेरे गैरकी इबादत का केहते)  
लेकिन (ऐ मौला!) तूने उन्हें और उनके बापदादा को  
(दुन्यवी मालो असबाबसे) इतना बेहरामंद फ़रमाया,  
यहां तक कि वोह तेरी याद (भी) भूल गए, और येह  
(बदबख्त) हलाक होनेवाले लोग (ही) थे।

أَنْ تَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ  
أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَإِبَاءَهُمْ  
حَتَّى نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا  
بُورًا ۱۸

19. सो (ऐ काफ़िरो!) उन्होंने (तो) इन बातों में तुम्हें  
झुटला दिया है जो तुम केहते थे पस (अब) तुम न तो  
अज़ाब फ़ैरनेकी ताक़त रखते हो और न (अपनी) मदद  
की, और (सुन लो!) तुम मेंसे जो शख़्स (भी) जुल्म  
करता है हम उसे बडे अज़ाब का मज़ा चखाएँगे।

فَقَدْ كَذَّبْتُمْ بِمَا تَقُولُونَ لِمَا  
تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا وَمَنْ  
يَظْلِمُ مِنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ۱۹

20. और हमने आपसे पहले रसूल नहीं भेजे मगर (येह  
कि) वोह खाना (भी) यक़ीनन खाते थे और बाजारों में  
भी (हस्बे जरूरत) चलते फिरते थे और हमने तुमको  
एक दूसरे के लिए आज़माइश बनाया है, क्या तुम  
(आज़माइश पर) सब्र करोगे? और आपका रब खूब  
देखने वाला है।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ  
الرُّسُلِينَ إِلَّا لِيُكَلِّمُوا  
الطَّعَامَ وَيَتَشُورُوا فِي الْآسْوَاقِ  
وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً  
أَتَّصِرُونَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ۚ ۲۰